

# सुनना और श्रवण करना

## जानिये फ़र्क क्या है?

किसी भी ध्वनि की तरंगों का हमारे कानों में पहुंचना सुनने की श्रेणी में आता है, लेकिन जब हम किसी बात को ध्यान लगाकर पूरी एकाग्रता से सुनते हैं तो वह श्रवण कहलाता है। श्रवण की प्रक्रिया में हमारा मस्तिष्क बात को पूरा सुनता है और सुनने के दौरान कहीं और भटकता नहीं है और फिर सुनी हुई बात का विश्लेषण करता है।

जब गौर से विश्लेषण करेंगे तब आप खुद यह जान पायेंगे कि आप केवल सुनते हैं या ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

जब हम समूह में या दो व्यक्तियों में संचार/संवाद की बात करते हैं, तब केवल सुनना ही महत्वपूर्ण नहीं होता है, पूर्वाग्रह के बिना और ध्यान से सुनना, बात के अर्थ और उसके भावों को समझना भी हमारे सुनने में शामिल होना चाहिये। श्रवण करने में हम कहने वाले व्यक्ति के प्रति अपना सम्पूर्ण आदर भाव रखते हैं।

बिंदु	सुनना	श्रवण करना
अर्थ	सुनना एक व्यक्ति की क्षमता होती है, जिसमें वह अपने कानों से ध्वनि तरंगों को ग्रहण कर सकता है।	श्रवण करने की क्रिया में एकाग्रता और सजगता होती है। इसमें बात/ध्वनि को उसके अर्थों और भावों के साथ सुना जाता है।
यह क्या है?	एक शारीरिक क्षमता है, जो हमें प्राकृतिक रूप से हासिल है।	एक प्रयासशील कौशल है, यह स्वाभाविक रूप से सबको हासिल नहीं होता है। इसे विकसित और अर्जित करना होता है।
प्रकृति	प्राथमिक और सतत।	द्वितीयक और निश्चित समय/वक्त पर।
गतिविधि	शारीरिक/भौतिक।	मनोवैज्ञानिक।
शामिल तत्व	कान से ध्वनि/सन्देश को ग्रहण करना।	कान से ग्रहण किये गये संदेशों की व्याख्या करना। बिना एकाएक टोके, अनुमति लेकर प्रश्न पूछना और कही जा रही बातों की पुष्टि करना।
प्रक्रिया	निष्क्रिय शारीरिक प्रक्रिया।	सक्रिय मानसिक प्रक्रिया।
क्रिया का स्तर	अवचेतन स्तर पर।	चेतना के स्तर पर।
इन्द्रिय उपयोग	केवल एक।	एक से कहीं ज्यादा।
कारण	जो भी ध्वनियाँ हमारे आसपास हैं, हम सबके बारे में जागरूक नहीं हैं, न ही हमारा उन पर कोई नियंत्रण है।	जब हम जिज्ञासु होते हैं और कुछ ज्ञान हासिल करना चाहते हैं, इस मकसद से श्रवण करना। ऐसी क्रिया करने वालों को श्रोता कहा जाता है। संगीत केवल सुनते नहीं हैं, उसे गुनते हैं, उसका अर्थ ग्रहण करते हैं। उससे सुख और दुःख महसूस करते हैं।
एकाग्रता	जरूरी नहीं, इसलिए यह बहुत आसान क्रिया होती है।	बेहद जरूरी है, इसके लिए अपने आप को तैयार करना होता है।
ध्वनि के स्रोत/ वक्ता से सम्बन्ध	केवल सुनने की क्रिया में वक्ता/ध्वनि के स्रोत से कोई सम्बन्ध नहीं बनता।	श्रवण करने में ध्वनि के स्रोत/वक्ता से एक किस्म का गहरा जुड़ाव होता है। यह जुड़ाव नेत्र-संपर्क और हाव-भाव से परिलक्षित होता है।
अभ्यास	सुनने के लिए किसी अभ्यास की जरूरत नहीं होती है।	श्रवण की क्रिया में अभ्यास, धीरज और संयम की आवश्यकता होती है।



रणनीतिक संचार केंद्र ( विकास संवाद का उपक्रम )

ए-5, आयकर कॉलोनी, जी-3, गुलमोहर कॉलोनी, बावड़िया कलां, भोपाल ( म.प्र. )-462039

फोन नं. : 0755-4252789, ईमेल : communication@vssmp.org / www.vssmp.org

